बी.ए. भाग-3
हिन्दी-प्रतिष्ठा
सप्तम पत्र-भाषाविज्ञान
लिखित भाषा

रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी. के. कॉलेज
डुमराँव - बक्सर

लिखित भाषा का स्वरूप

आग, चक्का और लिपि के आविष्कार को मानवता की प्रगति के इतिहास का सबसे क्रान्तिकारी सोपान माना गया है। आग से भोजन पकाने की मौलिक आवश्यकता की ही पूर्ति नहीं हुई, उस शक्ति का आविर्भाव भी हुआ जो संसार की स्थिरता को गतिशीलता में बदल सके। जल, तेल या बिजली की सारी शक्तियाँ उसी आग्नेय शक्ति का रूपान्तर है जो आज की गति और प्रगति का साधन बनी हैं। चक्के का आविष्कार उस गति का दूसरा पहलू है। किसी चीज को एक जगह से दूसरी जगह तक घसीटकर ले जाना एक सीमा के भीतर ही सम्भव था और अधिक भारी चीज घसीटी भी नहीं जा सकती थी, साथ ही उसमें सामूहिक श्रम भी अपेक्षित था।

चक्के ने इन सारी सीमाओं को समाप्त कर दिया। भारी से भारी चीज को अधिक-से अधिक दूर तक एक व्यक्ति के लिए भी ले जाना सम्भव हो गया और आज उसी चक्के की करामात रेल, मोटर से लेकर विमान तक में देखी जा

सकती है। और, तीसरी चीज थी लिपि, जिसकी सहायता से क्षणभंगुर वाचिक भाषा चिरस्थायी बन गयी; एक पीढ़ी की उपलब्धि दूसरी पीढ़ी के लिए सुलभ हो गयी, युग-विशेष का ज्ञान अनन्त काल तक के लिए सुरक्षित हो गया।

यहाँ इतना ध्यान में रखना आवश्यक है कि साहित्य-विज्ञान कला के क्षेत्र में मनुष्य की समस्त बौद्धिक उपलब्धियों का सबसे बड़ा आधार लिपि या भाषा का लिखित रूप है। वाचिक भाषा कान की भाषा थी, किन्तु लिपि के आविष्कार के बाद आँख की भी एक भाषा बन गयी जिसमें कान की कोई आवश्यकता न रही। अब तो लिपि का विकास नेत्र की सीमा पार कर गया है और नेत्रहीनों की ब्रेल नामक स्वतन्त्र लिपि हो गयी है जिसमें वे उसी उन्मुक्तता से लिख सकते हैं जिस तरह चाक्षुष लिपियों की सहायता से चक्षु-सम्पन्न।

लिपि के कारण ही हजारों वर्ष पहले आविर्भूत व्यास, वाल्मीकि, कालिदास आदि की रचनाएँ हमें उपलब्ध हैं।

इसी प्रकार हज़ारों मील दूर के लेखकों और कवियों की कृतियाँ सहज ही हमारे सामने आ जाती हैं। मिल्टन या शेक्सपियर हमारे लिए उतने ही सुलभ हैं जितने प्रसाद या प्रेमचंद। भाषा के क्षेत्र में देश और काल के व्यवधान को मिटा देना लिपि की सबसे बड़ी देन है। जैसा पहले कहा गया है, लिपि ने वाचिक भाषा की क्षणस्थायिता को चिर-स्थायिता में परिवर्तित कर दिया और ज्ञान के संचय का मार्ग प्रशस्त कर दिया। एक व्यक्ति के ही चिन्तन और विचार को बार-बार दुहराते रहने की समस्या का अन्त हो गया। अब एक व्यक्ति के चिन्तन को आधार बना कर दूसरा व्यक्ति उससे आगे बढ़कर कुछ कह सकता था, किन्तु मनुष्य लिपि की इस क्रान्तिकारी उपलब्धि से भी तृप्त नहीं हुआ।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट - प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव
बक्सर - बिहार